2

हिंदी भाषा शिक्षण और पाठ्य निर्धारण

मेहराज अली*

स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के उद्देश्य के साथ 1 सितंबर सन् 1961 को भारत सरकार द्वारा दिल्ली में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की स्थापना की गयी। भारत सरकार के अधीनस्थ शिक्षा मंत्रालय विद्यालयी शिक्षा एवं शिक्षक-प्रशिक्षण संबंधी नीतियों एवं कार्यक्रमों को लागू करने में यह संस्था विषय विशेषज्ञों से सलाह-मशविरा करती है तथा पाठ्यक्रम निर्धारण में बाल मनोविज्ञान तथा विशेष और आवश्यक तथ्यों का भी ध्यान रखता है। संस्था द्वारा प्रकाशित पुस्तकें हिंदी, उर्दू एवं अंग्रेज़ी में उपलब्ध होती हैं तथा देश के विभिन्न राज्यों में केंद्रीकृत पाठ्यक्रम योजना के तहत छात्रों को पढ़ाई जाती हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि पूरे भारतीय शैक्षिक परिदृश्य में एन.सी.ई.आर.टी. तथा इसके द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों का अत्यंत व्यापक और गहरा असर विद्यालयी शिक्षा-व्यवस्था पर पड़ता है। ये पुस्तकें पहली कक्षा से लेकर बारहवीं कक्षा तक के विशाल छात्र समूह के संस्कार और निर्माण में प्रत्यक्ष रूप से सहायक होती हैं। प्रथम या द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी पाठ्यपुस्तकों में जिन जीवन मूल्यों और वैचारिक आग्रहों की अनुशंसा की जाती है उसका व्यापक मनोवैज्ञानिक प्रभाव छात्र-छात्राओं के मस्तिष्क पर पड़ता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित पहली कक्षा से लेकर पाँचवीं कक्षा तक की हिंदी पाठ्यपुस्तकों का समीक्षात्मक तथा आलोचनात्मक दृष्टि से अध्ययन किया गया है।

भारतीय शैक्षिक परिदृश्य में एन.सी.ई.आर.टी. तथा इसके द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों का अत्यंत व्यापक और गहरा असर विद्यालयी शिक्षा-व्यवस्था पर पड़ता है। इसलिए इन पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा और आलोचना करना बहुत ही ज़रूरी है। इन सारी पाठ्यपुस्तकों में हिंदी की पाठ्यपुस्तकों पर स्वतंत्र रूप से विचार-विमर्श की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि ये पहली से लेकर बारहवीं कक्षा तक की हिंदी पाठ्यपुस्तकें विशाल छात्र समूह के संस्कार निर्माण में प्रत्यक्ष रूप से सहायक होती हैं। प्रथम या द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी पाठ्यपुस्तकों में जिन जीवन मूल्यों और वैचारिक आग्रहों की अनुशंसा की जाती है उनका व्यापक मनोवैज्ञानिक प्रभाव छात्र-छात्राओं के मस्तिष्क पर पड़ता है।

* *शोधार्थी*, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली

इसके अतिरिक्त पाठ्यपुस्तकें सीखने-सिखाने के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में प्रयुक्त की जाती हैं। राष्ट्रीय *पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* के आधार पर निर्मित हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तकें भाषा सीखने के सहज, सुगम व प्राकृतिक तरीकों का पुरज़ोर समर्थन करती हैं। पाठ्यपुस्तकें, पाठ्यसामग्री को व्यवस्थित व समग्र रूप में शिक्षक तथा विद्यार्थी, दोनों के लिए ही कार्य-प्रगति के सचेतक के रूप में कार्य करती हैं और जब बात हिंदी की पाठ्यपुस्तक की हो, तब पाठ्यपुस्तक की भूमिका और भी अहम हो जाती है। चूँकि हिंदी का प्रयोग एवं क्षेत्र इतना व्यापक है कि वह मानव जीवन के सभी क्षेत्रों एवं पक्षों से संबंधित है। इसीलिए भाषा की पाठ्यपुस्तक में विभिन्न प्रकार की विषय सामग्री, साहित्य, संस्कृति, धर्म, कला, इतिहास, भूगोल व विज्ञान, खेलकूद, उद्योग व मनोरंजन आदि से संबंधित प्रकरणों का समावेश रहता है। यद्यपि हिंदी केवल एक विषय मात्र नहीं, बल्कि सभी विषयों के सीखने का माध्यम भी है।

इसी कारण हिंदी की पाठ्यपुस्तकों में अन्य विषयों से संबंधित पाठ अपनी वैचारिक एवं भाषिक सामग्री के साथ दिए जाते हैं।

इसमें संदेह नहीं कि एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तकें यथासंभव प्रगतिशील विचारों की संवाहिका होती हैं। इनका प्रकाशन और संपादन सुप्रसिद्ध विषय-विशेषज्ञों व विद्वानों की देख-रेख में ही नहीं होता, बल्कि पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित होने तक उस पर काफ़ी शोध और अनुसंधान हो चुके होते हैं। विभिन्न विद्यालयों के मेधावी और रचनात्मक शिक्षकों से भी विचार-विमर्श किया जाता है। किंतु फिर भी कुछ ऐसे तत्व हैं जिनसे एन.सी.ई.आर.टी. की हिंदी पाठ्यपुस्तकों को आदर्श पाठ्यपुस्तक मानने में कठिनाई महसूस होती है। और इसी कारण स्वयं एन.सी.ई.आर.टी. समय-समय पर हिंदी पाठ्यपुस्तकों की खामियों तथा वैचारिक पूर्वाग्रहों को दूर करती रही है। ध्यान देने की बात यह है कि हिंदी पाठ्यक्रमों तथा पाठ्यपुस्तकों में संशोधन इसी उद्देश्य प्राप्ति की ओर बढ़ते कदम हैं। एन.सी.ई.आर.टी. ने अपनी हिंदी पाठ्यपुस्तकों के उद्देश्य इस प्रकार निर्धारित किए हैं—

- ऐसी पाठ्यसामग्री एवं शैक्षिक क्रियाओं का समावेश जिनसे बच्चों में राष्ट्रीय लक्ष्यों—जनतांत्रिकता, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद, सामाजिक न्याय तथा राष्ट्रीय एकता के प्रति चेतना तथा आस्था उत्पन्न हो और उनमें तर्कसंगत वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हो।
- पाठ्यचर्या एवं पाठ्यसामग्री भारतीय जीवन की परिस्थितियों तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश पर आधारित हो और उनमें वांछित भावी विकास की दिशा भी परिलक्षित हो।
- पाठ्यपुस्तकें बच्चों के भावात्मक एवं बौद्धिक उत्कर्ष, चरित्र-निर्माण तथा स्वस्थ मनोवृत्ति के विकास की दृष्टि से प्रेरणादायी सिद्ध हो, उनके द्वारा बच्चों में स्वयं शिक्षा एवं अधिकाधिक ज्ञानार्जन की उत्कंठा जागृत हो और वे निर्धारित पाठ्यविषय तक ही सीमित न रहकर विशद् एवं व्यापक अध्ययन के लिए जिज्ञासु तथा तत्पर बने रहें।
- नई शिक्षा नीति के आधारभूत सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यसामग्री के चयन में केंद्रिक शिक्षाक्रम से संबंधित विषय सामग्री एवं जीवन मूल्यों पर विशेष बल हो।

- सांप्रतिक एवं भावी जगत को सुखद-सुंदर बनाने वाली जीवन परिस्थितियों की ओर संकेत करने वाले पाठों का समावेश किया गया हो।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति — 1986 के लागू होने के साथ ही ऐसी शिक्षण सामग्री की आवश्यकता का अनुभव किया जाने लगा जो नई शिक्षा नीति के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक हो। इस नीति में रेखांकित किया गया कि शिक्षा बाल-केंद्रित होगी और छात्रों के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाएगा। इसके पश्चात् राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 तथा शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 लागू किए जाने से नई शिक्षा नीति में भारत के राष्ट्रीय जीवन के लिए आवश्यक कुछ महत्वपूर्ण मूल्यों को केंद्रिक शिक्षाक्रम के रूप में स्थान दिया गया है और इन्हीं मूल्यों का समावेश हिंदी की पाठ्यपुस्तकों में किया जाता है। जहाँ इन मूल्यों के विपरीत मूल्यों का प्रतिपादन हो जाता है, वहाँ उन अंशों का संशोधन और संपादन करने की व्यवस्था की जाती है।

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्धारित हिंदी पाठ्यक्रमों का मूल्यांकन

आलोचनात्मक चेतना हमें जीवन-जगत और विषय-वस्तु को सही दिशा और सही परिप्रेक्ष्य में समझने में सहायता प्रदान करती है। आलोचनात्मक दृष्टि तुलनात्मक अध्ययन और गंभीर वैचारिक पृष्ठभूमि की माँग करती है। विषय-वस्तु के पक्ष और विपक्ष पर संतुलित और गंभीर विचार-विमर्श के बाद कोई निर्णय निकालना और उस निर्णय पर मज़बूती से टिके रहना आलोचनात्मक चेतना का काम है। इसलिए विद्यालयी शिक्षा से ही इस गुण का पल्लवन छात्र-छात्राओं में अनिवार्य है।

एन.सी.ई.आर.टी. के पाठ्यक्रमों तथा पाठ्यसामग्री में इस आलोचनात्मक चेतना की काफ़ी कमी है। एन.सी.ई.आर.टी. के हिंदी शिक्षण के विभिन्न निहित उद्देश्यों में इस आलोचनात्मक चेतना का कहीं कोई स्थान नहीं है। यही वजह है कि किसी भी हिंदी पाठ्यपुस्तक की 'भूमिका' या 'आमुख' में इस चेतना को विकसित करने का दावा नहीं किया गया है। यह एन.सी.ई.आर.टी. के हिंदी पाठ्यक्रमों का एक कमज़ोर पक्ष है। वैसे यह स्पष्ट बात है कि दावा न होने के बावजूद कई पाठ्यसामग्री ऐसी हैं जिनसे आलोचनात्मक चेतना को विकसित होने में मदद मिल जाती है। विशेषकर ऊँची कक्षाओं की पाठ्यपुस्तक में कुछ पाठ ऐसे हैं जो आज तक की हमारी पुरानी मान्यताओं, आस्थाओं को झकझोर कर उस पर पुनर्दृष्टि की माँग करते हैं। वैसे ऐसे पाठों की संख्या अत्यंत कम है।

एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तकों में समय के साथ काफ़ी बदलाव देखा गया है। शिक्षा अब बाल मनोविज्ञान केंद्रित है तथा खेल-खेल में सीखने की प्रवृत्ति पर ज़ोर दिया जाने लगा है। इसका मूल कारण बच्चों में भाषा के प्रति रुचि जागृत करना है। पहली कक्षा की हिंदी पाठ्यपुस्तक *रिमझिम — 1* तथा दूसरी कक्षा की *रिमझिम — 2* केवल एक पाठ्यपुस्तक न होकर बच्चों के साथ भाषा संबंधित रोचक खेल खेल खेलने का माध्यम भी है। पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति की अध्यक्ष अनीता रामपाल ने इसके पाठ्यक्रम

निर्धारण में इस बात पर ज़ोर दिया है कि बच्चों से बातचीत करने के लिए, उन्हें स्वयं सोचकर कुछ कहने, पढ़ने-लिखने, बेझिझक होकर स्वयं को अभिव्यक्त करने का आत्मविश्वास पैदा करने के लिए घर और स्कूल में ही कितने अवसर ढूँढ़े जा सकते हैं। बच्चे अपने आस-पास की वस्तुओं के प्रति बहुत जल्दी आकर्षित होते हैं। अतः पुस्तक का पाठ्यक्रम इन्हीं बातों को ध्यान में रख कर तैयार किया गया है।

बच्चों की कल्पना का संसार बहुत बड़ा होता है। इस कल्पनाशक्ति को उचित मार्ग दिखाने का तथा निखारने का एक विशिष्ट कार्य एन.सी.ई.आर.टी. अपनी पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से करती आयी है। *रिमझिम — 1* में 'आम की कहानी' पाठ में बच्चों को चित्रों के माध्यम से कहानी बनाने को कहा गया है। बच्चे अपनी कल्पना और समझ से कहानी बनाते हैं। कहना होगा कि बच्चों के मानसिक स्तर और कल्पनाशीलता को बढ़ाने का यह एक उत्तम तरीका है। कविता और कहानी श्रवण और पठन कौशल के विकास में आश्चर्यजनक योगदान करती हैं। बच्चे कविताओं की तुकबंदी और लय से आनंदमय होते हैं। इसके साथ ही एन.सी.ई.आर.टी. अपने निर्धारित पाठ्यक्रमों में शिक्षक तथा अभिभावक दोनों ही के लिए प्रत्येक पाठ के अंत में निर्देश देती है। जिसमें संबंधित पाठ को पढ़ने तथा बच्चों के समक्ष प्रस्तुत करने के तरीके बताए जाते हैं। उदाहरण के रूप में *रिमझिम — 1* के पाठ 'आम की टोकरी' पाठ के अंत में तीन बिंदुओं में शिक्षकों के लिए दिशा-निर्देश दिये गए हैं, जिसमें बच्चों से बातचीत करने और उन्हें अभिनय संबंधित अलग-अलग गतिविधियाँ करवाने को कहा गया है।

कक्षा एक व दो की पाठ्यपुस्तक *रिमझिम — 1* तथा *रिमझिम — 2* में बाल साहित्य भरपूर मात्रा में दिया गया है। इसके अतिरिक्त पुस्तक में बच्चों के लिए इस तरह का वातावरण उपलब्ध किया गया है कि जिससे बच्चे संवाद स्थापित कर सकें। वह भाषा सीखने के दौरान रटी-रटाई वर्णमाला के आवरण से निकलकर स्कूल की दुनिया से बाहर की भी गतिविधियों से अपने आप को जोड़ सकें। बच्चे ऐसा करके न सिर्फ़ आनंदित होंगे, बल्कि उत्साह से संवादों का आदान-प्रदान भी करेंगे। उनके कौतूहल को शब्द दे पाना एक शिक्षक के लिए बच्चों से बातें करने और उनसे जुड़ने का एक सुनहरा अवसर होता है। संवाद का यह सिलसिला बच्चों की जिज्ञासाओं के शमन के साथ उनमें अभिव्यक्ति का आत्मविश्वास भी भर देता है।

कक्षा 2 तक एक सामान्य बच्चा काफ़ी हद तक पढ़ना सीख लेता है। किंतु भाषा शिक्षण और विकास का सिलसिला जारी रहता है। कक्षा 3 की पाठ्यपुस्तक *रिमझिम — 3* बच्चों के उतावलेपन, उनकी चंचलता आदि स्वाभाविक प्रवृत्तियों का प्रयोग करती प्रतीत होती है। पाठ्यपुस्तक में इस प्रकार के साहित्य को चुना गया है जिनमें बच्चों से बातचीत तथा उनके सवाल साफ़ झलकते हैं। पाठ्यपुस्तक के 'चाँद वाली अम्मा' पाठ का आरंभ बच्चों से संवाद के माध्यम से होता है। "तुम शरारत तो करती ही होगी? कौन-कौन सी शरारत करती हो? इन चीज़ों का इस्तेमाल तुम

कोई शरारत करने के लिए कैसे करोगी? झाड़ू, पंख, कागज़, गुब्बारा।" (*रिमझिम — 3*, 2006), इस प्रकार के संवाद बच्चों को पाठ, कक्षा तथा शिक्षक तीनों से जोड़ते हैं। बच्चों में अभिनय व नाट्यकला से परिचय कराने हेतु एकांकी को भी सम्मिलित किया गया है। 'बंदर बाँट' एकांकी बच्चों में नाट्य कला गुण के साथ-साथ समझदारी का पाठ भी सिखाता है। इसके अतिरिक्त बच्चों को आकर्षित करने हेतु पुस्तक में अनेक चित्र दिए गए हैं। भाषा सीखने में चित्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। चित्र बच्चों को आकर्षित तो करते ही हैं, सृजनशीलता और विश्लेषण को भी प्रोत्साहित करते हैं। 'कौवा और लोमड़ी' चित्रात्मक कहानी है। बच्चों से अभ्यास के रूप में उसी कहानी को चित्रों के माध्यम से बच्चों को पूरा करने को कहा गया है। इससे बच्चों में कल्पनाशीलता का विकास होता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। भाषा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया कक्षा के बाहर की दुनिया जैसे आस-पड़ोस, बगीचा, संगी-साथी आदि से भी उतना ही प्रभावित होती है जितनी कक्षा के भीतर आयोजित होने वाली गतिविधियों से। कक्षा 4 की पाठ्यपुस्तक *रिमझिम — 4* इस तथ्य को पुष्ट करती प्रतीत होती है। पाठ 'किरमिच की गेंद' में सम्मिलित क्रियाकलाप 'खोजो आसपास', 'पापा जब बच्चे थे' में 'परिवार' तथा 'कैसे थे पापा', 'दोस्त की पोशाक, पाठ में 'पास-पड़ोस' तथा सुनीता की 'पहिया कुर्सी' पाठ में 'मेरा आविष्कार' क्रियाकलाप के माध्यम से बच्चों को अपने आस-पास के वातावरण से जोड़ने तथा परिचित करने का प्रयास किया गया है। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* के दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखते हुए एन.सी.ई.आर.टी. इस प्रकार के क्रियाकलापों को पाठ्यपुस्तक में स्थान देकर बच्चों को विद्यालय और भाषा दोनों के प्रति रुचि बढ़ाने का अनुपम कार्य करती है। इसके अतिरिक्त पुस्तक में कई पाठ केवल पढ़ने के लिए दिये गए हैं। उनके साथ कोई अभ्यास प्रश्न नहीं हैं। इन पाठों का उद्देश्य बच्चों को पढ़ने के अतिरिक्त सामग्री उपलब्ध कराना तथा उन्हें पढ़ने व भाषा ग्रहण हेतु प्रोत्साहित करना है। बच्चों को पढ़ने के जितने अधिक अवसर मिलेंगे, उतना ही अधिक उनकी पढ़ने की गति एवं शब्द भंडार बढ़ेगा तथा वर्तनी संबंधी त्रुटियों में कमी आएगी।

कक्षा 5 तक आते-आते बच्चे में आस-पास के परिवेश से खासा तालमेल हो जाता है। वह वस्तुओं को समझने, परखने तथा विश्लेषित करने लगता है। इस स्तर पर शिक्षकों का कार्य अधिक बढ़ जाता है। यहाँ शिक्षक की क्रियात्मकता एवं रचनात्मकता बच्चों को इस कसौटी पर खरा उतारने में मददगार साबित होती है। *रिमझिम — 5* में शिक्षकों हेतु इस प्रकार के निर्देश दिये गए हैं कि वे इस प्रकार से शिक्षण करें कि बच्चे भाषा को अपने परिवेश और अनुभव को समझने का माध्यम मानकर उसका सार्थक प्रयोग कर सकें। *रिमझिम — 3* तथा *रिमझिम — 4* में कहानी तथा नाटक एवं कविता के माध्यम से बच्चों में साहित्य व भाषा के प्रति रुचि बढ़ाने के पश्चात् *रिमझिम — 5* में साहित्य की अन्य विधाओं को सम्मिलित किया गया है तथा साथ ही हिंदी के शीर्ष रचनाकारों से परिचय भी कराया गया है। इन

विधाओं में खबर, उपन्यास अंश, सूचनापरक लेख, भेंटवार्ता, शिकार कथा, विज्ञान कथा तथा यात्रा का वर्णन दिया गया है।

वैसे यह सही है प्रारंभिक कक्षा के बच्चों में उस अर्थ में और इस तरह आलोचनात्मक चेतना को विकसित नहीं किया जा सकता है जिस तरह ऊँची कक्षा के बच्चों में। छोटे-छोटे बच्चों में खेल-खिलौने, तीज-त्योहार तथा कहानी आदि के माध्यम से ही थोड़ा-बहुत आलोचनात्मक चेतना को पल्लवित-पुष्पित करने की शुरुआत की जा सकती है। वहीं दूसरी ओर, जब हम कक्षा 1 से 5 तक के अभ्यास प्रश्नों को देखते हैं तो ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों की भाषा अधिगम कुशलता को विस्तार प्रदान करने में पाठ्यक्रम में निर्धारित अभ्यास प्रश्न पूर्णतः सक्षम हैं। एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तकों में अभ्यास प्रश्नों को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित करके देखा जा सकता है।

1. ज्ञानात्मक/तकनीकी प्रश्न

"इस प्रकार के प्रश्न विद्यार्थियों से 'एकमात्र सही उत्तर' की माँग करते हैं। ये मुख्यत: स्मृति पर आधारित होते हैं। ये प्रश्न मज़बूत चौखटे के आधार पर तैयार किए जाते हैं, जो कि पाठ की ऊपरी सतह से ही सरोकार रखते हैं। अत: ये प्रश्न विद्यार्थियों की प्रत्यास्मरण क्षमता की जाँच करने में सहायक होते हैं।" (सीमा, अप्रैल 2017)

उदाहरणत

लड़ाई-झगड़ा ('बंदर बाँट', भाग-3)

1. दोनों बिल्लियों के बीच झगड़े की जड़ क्या थी?
2. उनके झगड़े का हल कैसे निकाला गया?
3. तुम किस-किस के साथ अक्सर झगड़ते हो?
4. जब तुम किसी से झगड़ते हो, तो तुम्हारा फैसला कौन करवाता है?

2. अर्थग्रहण/अनुभवपरक प्रश्न

"ये प्रश्न विद्यार्थियों के प्राप्त अनुभवों व समझ पर आधारित होते हैं। ये प्रश्न विद्यार्थियों की बोधात्मक क्षमता की जाँच करते हैं तथा साथ ही उन्हें प्रश्नों के उत्तर व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर प्रदान करने के अवसर उपलब्ध कराते हैं।" (सीमा, अप्रैल 2017)

1. शेर की जगह तुम ('शेखीबाज़ मक्खी', भाग — 3) मक्खी ने जब शेर को जगाया तो वह आग बबूला हो गया। तुम्हें जब कोई गहरी नींद से जगाता है तो तुम क्या करते हो?
2. ख्वाजा सरा के तीनों सवालों का क्या कोई और जवाब हो सकता है? अपने मन से सोचकर लिखो। ('जैसा सवाल वैसा जवाब', भाग — 4)

3. चिंतनपरक व सृजनात्मक प्रश्न

"चिंतापरक प्रश्न विद्यार्थियों की सोचने, समझने, तर्क करने व साथ ही उसकी विवेकशीलता का प्रयोग करने के अवसर भी प्रदान करते हैं। इनमें प्रतीकात्मक व व्यंजनात्मक प्रश्नों का समावेश रहता है, जहाँ बालक को व्यक्तिगत अनुभवों का प्रयोग कर प्रदत्त समस्या को समाधान तक पहुँचाने का कार्य करना होता है।" (सीमा, अप्रैल 2017)

1. अगर तुम शेर की जगह होतीं तो क्या करतीं? ('बहादुर बित्तो', भाग — 3)
2. यह कहानी एक ऐसे दिन की है जब मूसलाधार बारिश हो रही थी। अगर मूसलाधार बारिश के बजाए बूँदा-बाँदी होती तो क्या होता? ('टिपटिपवा', भाग — 4)

4. व्याकरणिक प्रश्न

"ये प्रश्न विशेषत: भाषायी तत्त्वों पर आधारित होते हैं। इन प्रश्नों के माध्यम से विद्यार्थियों की भाषा संबंधी आधारभूत संकल्पना व प्रयोग कुशलता की जाँच की जाती है।" (सीमा, अप्रैल 2017)

उदाहरणत — मुहावरों पर आधारित प्रश्न

चित्रों के माध्यम से मुहावरे पहचानना

('कब आऊँ', भाग — 3)

अँधेरा (चित्र) आरसी (चित्र)

.....

आस्तीन (चित्र) ग्यारह (चित्र)

.....

"अभिनय के आधार पर मुहावरों का प्रयोग करके दिखाओ।

नीचे कुछ वाक्य लिखे हैं। तुम्हें इनका अभिनय करना है। तुम चाहो तो कहानी में देख सकते हो कि इन कामों पर ज़िक्र कहाँ आया है।

- बनठन कर घूमने के लिए निकलना
- घड़ों पानी पड़ना
- मुँह बनाकर शिकायत करना
- गर्मजोशी से स्वागत करना" (सीमा, अप्रैल 2017)

5. संवेदनशील प्रश्न

"इस प्रकार के प्रश्न विद्यार्थियों को, विभिन्न मुद्दों (जैसे समाज, पर्यावरण, जेंडर, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों/व्यक्तियों तथा विविधता आदि से संबंधित) के प्रति संवेदनशील बनाने के उद्देश्य से रखे जाते हैं। ये प्रश्न विद्यार्थियों को समसामयिक विश्व से जोड़ने का कार्य भी करते हैं तथा उनमें सामान्य जागरुकता को भी विकसित करते हैं।" (सीमा, अप्रैल 2017)

उदाहरणत

1. "हाँ बचवा, न शेरवा के डर, न बाघवा के डर। डर तो डर, टिपटिपवा के डर, (टिपटिपवा, भाग — 3)" (सीमा, अप्रैल 2017)
2. "गुजरात में आदर के लिए नाम के साथ भाई-बहन जैसे शब्दों का प्रयोग होता है। तेलुगु में नाम के आगे 'गारू' और हिंदी में 'जी' जोड़ा जाता है। तुम्हारी कक्षा में भी अलग-अलग भाषा बोलने वाले बच्चे होंगे। पता करो और लिखो कि वे अपनी भाषा में किसी को आदर देने के लिए किन-किन शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। ('मुफ़्त ही मुफ़्त, भाग — 4)" (सीमा, अप्रैल 2017)

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्धारित पाठ्यपुस्तकों में अधिकांश अभ्यास प्रश्नों की प्रस्तुति अत्यंत ही रुचिकर व स्तरानुसार (मानसिक/संज्ञानात्मक) है। विद्यार्थियों में भाषा के व्यावहारिक ज्ञान व समझ हेतु, पुस्तक में संवाद निर्माण पर आधारित प्रश्न निर्माण कला व अभिनय आदि पर आधारित प्रश्नों को उपयुक्त स्थान दिया गया है। चिंतनपरक प्रश्नों के माध्यम से बच्चों को कई सामाजिक व पर्यावरण से जुड़े संवेदनशील मुद्दों के प्रति भी सजग बनाने का प्रयास किया गया है। व्याकरण-शिक्षण के संदर्भ में संदर्भगत भाषा-प्रयोग के मुख्य आधार बनाकर, प्रश्न निर्माण किए गए हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी अभ्यास प्रश्नों का स्वरूप व संख्या, कक्षा-स्तरानुसार उपयुक्त दिखाई देती है। ये अभ्यास प्रश्न, विद्यार्थियों की मुख्य भाषायी कौशलों (सुनना, बोलना पढ़ना व लिखना) में संलग्न होने के पर्याप्त अवसर उपलबध कराते हैं। इसके साथ ही विद्यार्थियों की कल्पनाशीलता,

रचनात्मकता, सृजनात्मकता आदि क्षमता का भी विकास करने में सक्षम दिखाई देते हैं।

निष्कर्ष

विद्यालयी शिक्षण में आलोचनात्मक चेतना को विकसित करने में अभ्यास के प्रश्न बहुत कारगर सिद्ध होते हैं। अभ्यास-प्रश्न में एक-दो प्रश्न अनिवार्य रूप से ऐसे किए जाने चाहिए जिस पर छात्र-छात्राओं को पुनर्विचार करना पड़े और काफ़ी सोच-विचार कर अपनी ओर से उत्तर लिखना पड़े। लेकिन एन.सी.ई.आर.टी. के अभ्यास प्रश्न भी मुख्य रूप से तथ्यात्मक ही होते हैं। उन सारे प्रश्नों के उत्तर पाठ्यपुस्तक की किसी-न-किसी पंक्ति में लिखे होते हैं। इसके अतिरिक्त पाठ्यक्रम निर्धारण में एन.सी.ई.आर.टी. ने बच्चों की मानसिक स्थिति और उनकी रुचि संबंधित विषयों पर खास ध्यान दिया है। एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्धारित कक्षा 1 से कक्षा 5 के पाठ्यक्रम में निम्नलिखित विशेषताएँ देखी जा सकती हैं —

- बच्चों से बातचीत करने, उन्हें स्वयं सोचकर कुछ कहने, पढ़ने-लिखने, बेझिझक होकर स्वयं को अभिव्यक्त करने का आत्मविश्वास पैदा करने के लिए पाठ्यक्रम में भरपूर अवसर दिए गए हैं।
- बच्चे अपने आस-पास की वस्तुओं के प्रति बहुत जल्दी आकर्षित होते हैं। अतः पुस्तक का पाठ्यक्रम इन्हीं बातों को ध्यान में रख कर तैयार किया गया है।
- पुस्तक में बच्चों के लिए इस तरह का वातावरण उपलब्ध किया गया है कि जिससे बच्चे संवाद स्थापित कर सकें।
- पाठ्यक्रम में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों दोनों के लिए निर्देश दिये गए हैं कि वह भाषा सीखने के दौरान रटी-रटाई वर्णमाला के आवरण से निकलकर स्कूल की दुनिया से बाहर की भी गतिविधियों से अपने आप को जोड़ सकें।
- पाठ्यक्रम में बच्चों के उतावलेपन, उनकी चंचलता आदि स्वाभाविक प्रवृत्तियों का उचित प्रयोग किया गया है। पाठ्यपुस्तक में इस प्रकार के साहित्य को चुना गया है, जिनमें बच्चों से बातचीत तथा उनके सवाल साफ़ झलकते हैं।
- चित्रों का प्रयोग कर बच्चों को भाषा शिक्षण के तत्वों का समावेश किया गया है।
- पुस्तक में अभ्यास प्रश्नों के अतिरिक्त पढ़ने की अतिरिक्त सामग्री भी दी गयी है, ताकि उन्हें पढ़ने व भाषा ग्रहण हेतु प्रोत्साहित किया जा सके।
- सामाजिक दायित्वों और सांस्कृतिक मूल्यों से परिचय हेतु कहानियों आदि का समावेश किया गया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि एन.सी.ई.आर.टी. की हिंदी पाठ्यपुस्तकों में संख्या में कम ही सही किंतु ऐसे पाठ कहीं-कहीं मिल जाते हैं जो छात्र-छात्राओं के आलोचनात्मक-विवेक को मज़बूत आधार प्रदान करने की चेष्टा करते हैं। इतना सही है कि प्रारंभिक कक्षाओं में इसकी कमी खलती है। इसके पक्ष में यह तर्क प्रस्तुत करना सही नहीं है कि उस वय के बच्चों में आलोचनात्मक दृष्टि का विकास नहीं किया जाना चाहिए। गलत और सही की समझदारी ही आलोचनात्मक चेतना है। एन.सी.ई.आर.टी. के पाठ्यक्रमों को क्रमशः संस्कृति संग्रह के बरक्स प्रश्नोन्मुखी शिक्षा की पड़ताल पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

संदर्भ

एन.सी.ई.आर.टी. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा* 2005, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

——. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005. राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र.* 'आधुनिक भारतीय भाषाओं का शिक्षण' (1.3). एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

——. 2006. *कैसे पढ़ाएँ रिमझिम शिक्षक संदर्शिका.* एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

——. 2006. *रिमझिम भाग — 1, 2, 3, 4* व *5*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

सीमा. 2017. 'पाठ्यपुस्तक रिमझिम के अभ्यास प्रश्नों का विश्लेषणात्मक अध्ययन'. *प्राथमिक शिक्षक*. (अप्रैल 2017) एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.